आज के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज का योगदान

आइए सबसे पहले विषय को समझ लें। आर्य समाज क्या है और आज का परिप्रेक्ष्य क्या है?

आर्यसमाज न कोई धर्म है, न समुदाय, न ही कोई मत या मतान्तर। आर्य अर्थात् श्रेष्ठ, समाज अर्थात् लोगों का समूह. तो आर्य समाज हुआ श्रेष्ठ लोगों का समाज. सन् 1875 में जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की तो उन्होंने श्रेष्ठ लोगों के समाज की ही क्यों परिकल्पना की? क्यों कि –

यद् यद् आचरते श्रेष्ठः तत् तत् एव इतरो जनः
सः यत् प्रमाणं कुरुते लोकः तद् अनुवर्तते।

अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति जो आचरण करता है, अन्य उसी का अनुकरण करते हैं। वह जिसे प्रमाण मानता है संसार उसका पालन करता है। तो ये श्रेष्ठ व्यक्ति एक तरह से पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः इन श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण धर्मानुकूल होना चाहिए। धर्म और समाज का चूंकि गहरा संबंध है इसलिए धर्म समाज में सदा मर्यादित जीवन जीने के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। धर्म का अर्थ यहां पर विभिन्न सम्प्रदायों से – हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई से नहीं है बल्कि नियमों के पालन से है। ये नियम जो स्वामि दयानन्द ने आर्य समाज के लिए दिए किसी भी परिप्रेक्ष्य में सार्थक हैं। इन नियमों की चर्चा हम साथ-२ करते जाएंगे।

अब ज़रा आज के परिप्रेक्ष्य पर विचार करें- आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। आज का युवा वर्ग हर बात को यूंही नहीं मान लेता बल्कि तर्क वितर्क करता है। अपनी जिज्ञासा की पूर्ति

करने की के बाद ही संतुष्ट होता है, विज्ञान की कसौटी पर परखता है।

आज मानव जहां, चांद पर बस्ती बनाने की सोच रहा है मंगल ग्रह पर जीवन की खोज कर रहा है वहीं सिक्के का दूसरा पहलू देखिए - अंधविश्वास की गहरी खाईयों में डूब रहा है। कुछ समय पहले मंदिरों में मूर्तियों द्वारा दूध पीने की घटना जिसे वैज्ञानिकों ने एक भौतिकी के सिद्धांत द्वारा सिद्ध कर दिया था आम जनता उसे एक चमत्कार मान रही थी। ऐसा नहीं है कि यह घटना हमारे भारत में ही घटी। मरियम की मूर्ति से आ खून के आंसू बहने की घटना भी आपने समाचार पत्रों में पढ़ी होगी। तो यहां आर्य समाज क्या कहता है - सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है - क्या इन घटनाओं के पीछे विद्या का सत्य है। कदापि नहीं। आर्य समाज किसी बात को बिना प्रमाण के कभी नहीं मानता। सत्य को परखता है और ऐसी अंधविश्वास और संकीर्ण ~~घटनाओं~~ मानसिकता की सदा ही निंदा करता है।

~~यहां~~ मैं मूर्ति पूजा करना ही वास्तव में निकृष्ट है। आर्य समाज कहता है - ईश्वर एक है - वह ऋग्वेद का मंत्र है -

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति -

अर्थात विद्वान एक ही परमेश्वर को इन्द्र वरुण आदि अनेकों नामों से पुकारते हैं। और वह ईश्वर कैसा है - सच्चिदानंद.. निराकार, सर्वशक्तिमान, अजन्मा, अनित्य

शाश्वत । वह सबका है - हिंदुओं का मुसलमानों का सिखों ईसाइयों का।

आजकल दूरदर्शन पर धार्मिक चैनलों की भरमार है। सुबह से रात तक कई तरह के गुरु भोली जनता की धार्मिक भावनाओं का फायदा उठाते हैं। आखिर कुकुर मुत्तों की तरह इतने गुरु कैसे उग आए - जरा गौर करें - अधिक महत्वकांक्षा और थोड़े समय में मान पद प्रतिष्ठा पाने के चक्कर में लोग अपने नैतिक मूल्यों को भूल गए हैं। धार्मिक ग्रन्थों को पढ़ने का उनके पास समय नहीं है। ये धार्मिक गुरु लोगों को परमात्मा के दर्शन कराने का लोभ देते हैं। कुछ गुरु तो कान में मंत्र फूंकने के हजारों रुपये लोगों से ऐंठ लेते हैं। आधुनिक युग की कई बीमारियां जैसे high blood pressure, diabetes, arthritis, cancer से लोग ग्रसित हैं जो अत्यधिक तनाव व चिंता के कारण पैदा होती हैं। शांति की खोज में धर्म गुरुओं के चक्कर में फंसे लोग असली परमात्मा को तो भूल जाते हैं और इन गुरुओं की आरतियों में ही रम जाते हैं। गुरु बिना गति नहीं भी इन्हीं गुरुओं का दिया मंत्र है। महर्षि दयानंद इस गुरुडम के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने कभी अपने को गुरु नहीं कहा न ही कोई शिष्य बनाया। सब धार्मिक शिक्षाएं जो वेदों में थी उनको पुनर्जीवित किया और सभी लोगों तक पहुंचाया। किसी के कान में मंत्र नहीं फूंका।

गायत्री जाप का जो प्रभाव ~~ज्ञान~~ मन मस्तिष्क पर पड़ता है वह वैज्ञानिकों

द्वारा प्रमाणित है।

अब आज की सामाजिक स्थिति का विचार करें - जातिवाद, लिंग भेद, कन्या भ्रूण हत्या जैसी गंभीर समस्याएं सिर उठाये खड़ी हैं। सभ्य और धनी परिवारों में कन्या भ्रूण हत्या के मामले सबसे ज्यादा प्रकाश में आए हैं। एक मां ही नारी होते हुए न जाने कैसे अपनी बच्ची की हत्या करवा सकती है। कन्या भ्रूण हत्या के कारण लड़के, लड़कियों के बीच अनुपात घट रहा है। प्रति 1000 लड़कों में केवल 700 या 800 ही लड़कियां है। पंजाब और हरियाणा में तो लड़कियों की हालत द्रौपदी जैसी हो रही है। समय रहते संभलने की आवश्यकता है। वेद ही कहता है - यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता। घरों में भ्रूण तथा बाहर जाकर काम करने वाली महिलाओं का शोषण वेदानुकूल नहीं। स्वामि दयानंद ने महिलाओं की समान शिक्षा पर बल दिया, विधवा विवाह की पैरवी की, बाल विवाह का विरोध किया। आर्य समाज ने सदा ही दहेज प्रथा का विरोध किया। जाति वाद से ऊपर उठकर एक सभ्य समाज हो, जहां पर सब बराबर हों - योग्यता के आधार पर आरक्षण हो न कि जाति के आधार पर।

आर्य समाज कहता है संसार का उपकार अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। स्वामि रामदेव जी योग के द्वारा जनता का शारीरिक और आत्मिक स्वास्थ्य का ध्यान रख रहे हैं वे आर्य समाजी ही हैं।

आज के भौतिकवादी युग में संतोष नाम का धन विरले लोगों के ही पास है। मंदिरों में प्रार्थना और प्रसाद चढ़ाना भी शर्तों पर हो गया है। मनोकामना पूरी हुई तो उसी हिसाब से 100 या 200 रु का प्रसाद चढ़ाया जाएगा। परन्तु आर्य समाज वेद मंत्रों द्वारा क्या प्रार्थना सिखाता है - विश्वानि देव दुरितानि परासुव - हे देव हमारे सम्पूर्ण दुर्व्यसनों को दूर करो, कितनी सारगर्भित प्रार्थनाएं हैं वेद की। और कहा ~~मन्मे~~ तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु - मेरा मन शुभ संकल्पों वाला हो कल्याणकारी और ~~शुभ~~ हितकारी संकल्प हों। अपने साथ दूसरों के लिए भी प्रार्थना की। यह है आत्मिक उन्नति।

आज का मनुष्य स्वार्थी हो चला है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। एकल परिवार में लोग आज़ादी का अनुभव करते हैं। बूढ़े माता पिता बच्चों को बोझ लगते हैं। अथर्ववेद का मन्त्र कहता है - स्विस्ते मात्रे उत पित्रे नो अस्तु - हमारे माता पिता सुख को प्राप्त करते रहें। ऐसी सेवा करने का निर्देश वेद मंत्रों द्वारा आर्य समाज ही दे सकता है। आजकल के बच्चे भी माता पिता से दूर हो रहे हैं. स्नेह अभाव के कारण इन नौनिहालों का लालन पालन नौकरों पर है। यही बच्चे संस्कार विहीन होकर बुरी संगत में पड़ जाते हैं या फिर दूरदर्शन के आगे बैठकर अपना समय नष्ट करते हैं। वैदिक संस्कार दैनिक संध्या, यज्ञ आदि बच्चों को संस्कारवान बनाते हैं तथा बुरे व्यसनों से बचाते हैं।

~~ऐसी~~ सामवेद की सूक्ति है-- उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्तु अर्थात हमारे बच्चे हमारी बातों तथा वेदवाणी को सुनें। ऐसी वेदवाणी को सुनकर क्या बच्चे अपने कर्तव्यों से विमुख होंगे -- कभी नहीं।

आर्य समाज राष्ट्र के प्रति प्रेम जगाता है। ऋषि दयानन्द सच्चे राष्ट्रवादी थे। उन्होंने ही सबसे पहले स्वराज्य का नारा दिया।
ओं सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।
प्रेम से मिलकर चलो, बोलो, सभी ज्ञानी बनो -
पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य के मानी बनो।
हो विचार समान सबके चित मन सब एक हों
ऐसा सुन्दर अखण्डता का पाठ आर्य समाज के अतिरिक्त कौन दे सकता है।

आर्यसमाज कर्मठता और पुरुषार्थ का पाठ पढ़ाता है। अविद्या का नाश और विद्या की निरन्तर वृद्धि कहता है 8 वां नियम। प्रगतिशील युग में निरन्तर ज्ञान वृद्धि की आवश्यकता है। हमारी जनसम्पदा तभी वरदान बन सकती है यदि यह कर्मशील हो। आलस्य रहित हो -
अथर्ववेद की सूक्ति -
कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः
मेरे दाहिने हाथ में कर्म पुरुषार्थ है तो

सफलता विजय आपके हाथ में निश्चित है। और फिर क्या हमें केवल अपनी ही उन्नति से संतुष्ट ~~रहना~~ रहना चाहिए - नहीं सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए चाहे वह पारिवारिक स्तर पर हो, सामाजिक या राष्ट्रीय स्तर पर।
10 नियम कहता है सर्वहितकारी नियम पालने में हम परतन्त्र हैं अर्थात् हर काम कानून के दायरे में व्यवसाय या कुछ भी धनोपार्जन का कार्य नियमों में रहकर जिससे कि एक सभ्य समाज का निर्माण हो और राष्ट्र मज़बूत हो।

अन्त में कहूँगी कि आर्य समाज एक प्रगतिशील समाज का प्रेरक है और आज के परिपेक्ष में आर्य समाज का योगदान अतुलनीय है।